



संगीत : संस्कार और एकाग्रता का एक मात्र साधन

प्रा. सुनील भि. कोल्हे

सहायक प्राध्यापक , एम.ए. (संगीत), नेट, एम.फिल. एवं संगीत अलंकार , महाविद्यालय – जी.एन.
ए. महाविद्यालय, बारशिटाकली , जि. अकोला.

साराश :

जीव की सूक्ष्मता जब मानव देह की स्थूलता में अंकुरित होने की प्रक्रिया में पदार्पण करती हैं, उसी क्षण जीव पर सूक्ष्म संस्कारों की प्रक्रिया आरंभ होती हैं। गर्भाधान संस्कार के फलस्वरूप ही अजर-अमर जीव मनुष्य के आकार में अवतरित होता हैं। जीवन-मरण के मध्य संस्कारों के चक्र में जीव स्वयं को गति"ील रखता हैं। मानव पर हुए इन संस्कारों की अमिट छाप उसके मन-आत्मा पर इतनी गहरी होती कि वह उन्हें जीवनभर याद रखता है। एक संपूर्ण संतुलित मानव और मानव का संतुलित जीवन अच्छे संस्कारों की ही परिणति है, अन्यथा सुसंस्कार विहीन मानव, मानव कम दानव अधिक होगा । मानव जन्म से मृत्यु तक अच्छे-बुरे संस्कारों में विचरण करते हुए अंत में मानव देह धारण करके अमूल्य अवसर को या तो सार्थकता प्रदान करता है अथवा निरर्थकता । यही संस्कारों की महिमा है ।

प्रस्तावना :

“मानव जन्म नहीं दोबारा” की सार्थकता में ही मानव अपने अच्छे संस्कारों के साथ जीवन की सार्थकता प्रमाणित करने हेतु जीवन के अंतिम क्षणों तक प्रयत्न"ील रहता है। जीवन के सफलता की कुंजी संस्कार है। सामवेद की पवित्र धारा से उत्पन्न संगीत जिसकी नादात्मक शक्ति मानव जीवन को मोक्ष रूपी सागर में विलीन करने की शक्ति अपने में संजोये हुए है, वह कला बाद में है पहले 'संस्कार' है। संगीत संस्कार ही है । मानव के जन्म से मृत्यु तक के जीवन यात्रा में एक भी ऐसा पड़ाव नहीं है, चाहे वह आनंद का हो या विषाद का, सुख का हो अथवा दुःख का, संगीत का उपयोग नि"चित रूप से होता आया है। संगीत सुख-दुःख से परे होकर हमारे जीवन में समाहित रहता है। संगीत में सुख और दुःख दोनों को ही अभिव्यक्त करने की शक्ति है। संगीत का संस्कार सर्वप्रथम माँ की ममता रूपी लोरी के माध्यम से होता है। इसी सांगीतिक संस्कार द्वारा बालक माँ के स्नेह को, माँ के स्वर को एवं स्वर में व्यक्त होने वाले प्रेम को पाकर निद्रा में चला जाता है ।

संगीत को कला का स्थान प्रदान करने एवं संस्कार कहने में अंतर है। संस्कार कहने में जीवन की सूक्ष्मता दृष्टिगोचर होती है और कला कहने में व्यक्त करने के माध्यम की स्थूलता । एक में जीवन है दूसरे में जीवन्तता है। बाह्य को अंत में समाने का प्रयत्न संस्कार है, एवं अंत: से बाह्य में प्रकट करने की क्रिया कला है। संस्कार एवं कला के सूक्ष्म अंतर को आत्मसात करके संगीत में इसे परखना आव"यक है। संगीत में भावभिव्यक्ति की जीवन्तता है। मन को एकाग्र करने की अपार शक्ति है ।

मानव का संपूर्ण जीवन संस्कारों से व्याप्त है। उसे अपने जीवन में किसी न किसी संस्कार से गुजरना पडता है यथा – नामकरण संस्कार, मुंज संस्कार, उपनयन संस्कार, विवाह संस्कार, इन सभी कार्यों को संस्कार कहा जाता है। इन सभी संस्कारों में संगीत को प्राथमिकता दी जाती है। हमारे दैनिक कार्यों में

संगीत का संस्कार प्रातः से रात्रि तक की दैनिक क्रियाओं में भरपूर मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। गावों के सुरम्य वातावरण में स्त्री-पुरुषों का घरों एवं खेतों में प्रत्येक कार्य संगीतात्मक होता है। दही बिलौना, अन्न का कूटना, चक्की पीसना, कृषि सम्बन्धी कार्य जैसे फँसल का बोना-काटना, निंदाई-सफाई, सभी में पारम्परिक गीतों का निर्वहन आज भी श्रवणीय है। प्रमुख संस्कारों में संस्कार गीत तो गाये ही जाते हैं परन्तु दैनिक कार्यों में भी गीतों का बड़े प्रमाण में प्रयोग होता है। यह गीत साधारणतया लोकगीत की श्रेणी में आते हैं। सरल, सुबोध संस्कारक्षम गीतों का प्रदर्शन सहज रूप से आत्मसात होता है। लोकसंगीत में जन-मन को रंजन करने का सामर्थ्य होता है। प्राकृतिक रूप से उपजे लोकसंगीत का संगीतमय एवं परिमार्जित रूप ही शास्त्रिय संगीत कहलाता है, ऐसा विद्वानों का मत है।

संगीत संस्कार है इस तत्व को निरूपित करने के पश्चात् अगले चरण में हम एकाग्रता के तत्व को संगीत साधना के द्वारा कैसे प्राप्त कर सकते हैं यह देखेंगे क्योंकि, समस्त ललित कलाओं में संगीतकला ही एकमात्र ऐसी कला है जिसमें एकाग्रता शीघ्र होती है।

भारतीय दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति को सर्वोच्च माना गया है। भारतीय कलाकारों ने संगीत को कभी साध्य नहीं माना है। उन्होंने लक्ष्यप्राप्ति के लिए इसे साधन रूप में स्वीकार किया है। वैसे देखा जाय तो सभी कार्यों में एकाग्रता का होना आवश्यक है, परन्तु जिस मोक्ष की प्राप्ति हेतु मानव प्रयास करता है उसमें एकाग्रता की पराकाष्ठा आवश्यक है। इस एकाग्रता को पाने के लिए मानव विभिन्न मार्गों एवं साधनों का प्रयोग करता आया है। मनुष्य का मन चंचल होता है और उसकी एकाग्रता में सबसे बड़ा दुश्मन होता है उसका मन। इस मानव मन को अधिकार में करके उसकी चंचलता पर लगाम लगाने का एवं सात्विक पथ पर चलने का एकमात्र साधन संगीत है। योगियों ने भी शक्तियों को ऊर्ध्वगामी बनाने में संगीत को सहायक माना है। योगियों की भाषा में संगीत 'नादयोग' है। क्योंकि अन्य कलाओं की अपेक्षा मन की एकाग्रता संगीत द्वारा अधिक सहज संभव है। मनुष्य अपने मन, मस्तिष्क, कान, आँखें, वाणी इन सभी इंद्रिया के सहयोग से संगीत साधना करते हुए एकाग्रता की प्राप्ति करता है। संगीत कला ही एकमात्र कला है जिसके द्वारा उपर्युक्त सभी इंद्रियों को एक दूसरे की निर्भरता की अनुभूति होती है और एक निश्चित दिशा में इंद्रियों की एक दुसरे की सहायता से संगीत साधना में अग्रसर होने की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

संगीत शास्त्रों में शरीर को वीणा की संज्ञा दी गई है। कण्ठ साधना एवं गायन यह योगसाधना है, एक प्रकार का प्राणायाम है। प्राणवायु को ग्रहण करके उसे संतुलित एवं आवश्यकतानुसार स्वर के रूप में बाहर निकालना प्राणायाम का ही एक प्रकार है। ओंकार की साधना संगीत में की जाती है। इसी ओंकार की साधना से योगियों-मनिषियों ने मोक्ष की प्राप्ति की है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में 'अनहद नाद' का उपयोग किया जाता है। किन्तु देखा गया है कि, 'आहद नाद' के उपयोग द्वारा हम एकाग्रता शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं। जब संगीत साधक अपनी स्वर साधना करता है तब प्रायः तानपुरा लेकर वह अपनी आँखें बंद कर लेता है और उसके कान तानपुरे के स्वर को ग्रहण करते हैं, तभी कंठ द्वारा वांछित स्वर निकालता रहता है और उसका मस्तिष्क इस सम्पूर्ण क्रिया का अवलोकन करता है। उसकी सम्पूर्ण एकाग्रता स्वर साधना में है किन्तु उसकी आँखें बंद हैं इसी कारण उसका ध्यान कहीं और भटक नहीं सकता। उसके कान तानपुरे के स्वर एवं कण्ठ द्वारा निकल रहे स्वरों पर लगे हुए हैं। इस परिस्थिति में मन को विचलित करने वाले समस्त इंद्रिय परस्पर निर्भर होकर कार्यरत होने से मन भी स्वर साधना में विलीन हो जाता है। सतत चलने वाली यह प्रक्रिया एकाग्रता की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सहायक होती है। संगीत द्वारा एकाग्रता शीघ्र एवं स्थायी होती है, यह निश्चित है चाहे वह जनमन रंजन के लिए हो अथवा ईश्वर के सानिध्य हेतु हो एकाग्रता का तत्व महत्वपूर्ण है जो केवल संगीत के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। अन्य कलाओं में यह शक्ति काफी कम प्रमाण में होती है।

आध्यात्मिक विकास के लिए जितनी आवश्यकता धर्म की है, उतनी ही जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए कला की है। भक्ति-मार्ग का अवलंबन कर कीर्तन-भजन के सहारे कोटि-कोटि जन मानस संकटों के समुद्र पार कर गए। विभव इतिहास साक्षी है कि प्राचीन युग में किसी भी देश का संगीत, चाहे वह लौकिक रहा हो अथवा आध्यात्मिक, भक्ति-भावना से ओतप्रोत था। संगीत को आत्मिक चेतना का रूप माना जाता है। संगीत में अस्मिन् सामर्थ्य है। संगीत एक कला है। विद्वानों ने कला के अनेक प्रयोजन बताए हैं,

यथा कला जीवन के लिए, सेवा के लिए, आत्मानुभूति के लिए, आनंद के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए। चित्तवृत्तियों पर लगाम लगाकर मन को पवित्र बनाने की अपार क्षमता संगीत में है।

आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ राष्ट्रभक्ति के संस्कार भी संगीत के माध्यम से मानव पर होते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के समय संगीत को ही माध्यम बनाकर राष्ट्रीयता के रंग में रंगे दीवानों ने दे"वासीयों के मन में दे"भक्ति की ज्वाला जलाई थी। आज भी जब हम दे"भक्ती के गीत सुनते हैं तो हमारा सीना गर्व से द"ा के प्रति आदरभाव से फूल जाता है।

मानव मन पर भारतीय संगीत के सकारात्मक प्रभाव होते हैं। हृदय को कम्पित करनेवाला गायन मृतप्राय हृदय में संजीवनी, नैराश्य में आ"ा, चिन्ताकी की ज्वाला में शान्ति तथा दृ:खमय क्षणों में आनन्द प्रदान करते हैं। मोक्ष को प्रदान करनेवाली संगीत कला मनुष्य के भौतिक दृ:खों का भी अन्त करती है। यही कारण है की आज के वैज्ञानिक युग में भी चिकित्सक तथा मनोवैज्ञानिक संगीत में छिपे हुए स्वास्थ्यदायी तत्वों की खोज में प्रयत्न"ील हैं। यदि संगीत को सुनियोजित ढंग से मनुष्य अपने आचार-व्यवहार में लाये तो नि"चित ही उसका मन तथा शरीर निरोगी तथा स्वस्थ रह सकता है।

निष्कर्ष :

1. भारतीय कलाकारोंने संगीत को कभी साध्य नहीं माना है। उन्होंने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव इसे साधन रूप में स्वीकार किया है।
2. योगियों की भाषा में संगीत नादयोग हैं। मूलाधार स्थित योनि में कुंडलिनी शक्ति की स्थिति मानी गई है। यह शक्ति जीव की प्राण-"क्ति है।
3. भक्तिसंगीत से सरलतापूर्वक आत्मा परमात्मा में लिन हो जाता है तथा चित्त-वृत्तियों पर लगाम लगाया जा सकता है।
4. संगीत से मन की एकाग्रता बढ़ती है तथा धार्मिकता आती है।
5. मानव की आत्मा को पवित्र करने का काम संगीत करता है।
6. मानव मन पर भारतीय संगीत के सकारात्मक प्रभाव होते हैं।
7. राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने के लिए संगीत से अच्छा कोई दूसरा साधन हो नहीं सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूचि -

1. नमिता बॅनर्जी - मध्यकालीन संगीतज्ञ एवं उनका तत्कालीन समाज पर प्रभाव, प्रथम संस्करण 1996, राधा पब्लिके"ान नई दिल्ली 02
2. डॉ. उमा"ंकर शर्मा - संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में, प्रथम संस्करण, 2001, इस्टर्न बुक लिंकर, नई दिल्ली।
3. डॉ. पुनम दत्ता - भारतीय संगीत िक्षा और उद्दे"य, प्रथम संस्करण, 2009, राय पब्लिके"ान, नई दिल्ली,
4. डॉ. स्वतंत्र शर्मा - सौंदर्य रस एवं संगीत, प्रतिमा प्रका"ान, दिल्ली 2005
5. सम्पादक, लक्ष्मीनारायण गर्ग, निबन्ध संगीत, तृतीय संस्करण 2003, संगीत कार्यालय, हाथरस।
6. प्रो. सत्यभान शर्मा - पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की संगीत परंपरा हवेली संगीत, प्रथम संस्करण 1999, राय पब्लिके"ान, नई दिल्ली,
7. डॉ. भगवन्त कौर-परम्परागत हिन्दुस्तानी सैध्वान्तिक संगीत, प्रथम संस्करण 2002 कनिष्क पब्लि"र्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 02
8. डॉ. कुमार ऋषितोष-संगीत िक्षण के विविध आयाम, कनिष्क पब्लि"र्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 02
9. संगीत मासीक पत्रीका अपैल, मई, दिसंबर 2009, संगीत कार्यालय हाथरस।